भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल में अन्तराष्ट्रीय लवणता वेबीनार का आयोजन।

आज संस्थान में **बदलती जलवायु में लवणीय परिस्थिति में लचीली कृषि** विषय पर एक अन्तर्राष्ट्रीय लवणता वेबीनार आयोजित किया गया। यह वेबीनार केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान करनाल द्वारा बायोसेलाईन कृषि के लिये अन्तराष्ट्रीय केन्द्र, दुबई के सहयोग से आयोजित किया गया। इस वेबीनार का उदघाटन डा0 त्रिलोचन महापात्रा, महा निदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली तथा सचिव डेयर, भारत सरकार द्वारा किया गया। उन्होने अपने संबोधन में कहा कि प्राकृतिक एवं जलवायु की बदलती हुई प्रक्रिया में अतिरिक्त जल के अधिक प्रयोग व भू प्रयोग के बदलते तरीकों से लवणता दिन प्रतिदिन बढ रही है। मृदा और जल की लवणीकरण की समस्या के समाधान हेतु अन्तराष्ट्रीय सहयोग द्वारा शोध प्रयासों में वृद्धि करना इस वेबीनार का उददे्श्य है। विश्व में शुष्क और अर्धशुष्क क्षेत्रों विश्व खाद्य सुरक्षा के लिये मृदा लवणता एक बडी चुनौती है क्योंकि इससे उत्पादन में काफी कमी आती है। विश्व में कुल कृषि योग्य भूमि का 20 प्रतिशत व सिंचित भूमि का 33 प्रतिशत हिस्सा 900 मिलियन हैक्टेयर से अधिक लवधता से ग्रस्त है। दशको से बढती जनसंख्या, सघन कृषि पद्धति और जलवायु परिवर्तन द्वारा मृदा व जलों में लवणता में वृद्धि हो रही है।

डा0 इस्महाने एलौफी, महानिदेशक बायोसेलाईन कृषि के लिये अन्तराष्ट्रीय केन्द्र, दुबई ने कहा कि ऐशिया क्षेत्र में कोविड–19 की महामारी ने व्यापार और कृषि विशेषतः लवणता को प्रभावित किया है। वर्तमान समय की मांग है कि एक फसल की जगह बहुत सारी फसलों की खेती की जाए ताकि फसलों में लचीलापन एक वास्तविकता बन पाए।

डा0 एस. के चौधरी उपमहानिदेशक, प्राकृतिक संसाधन प्रबंध, भा.कृ.अनु.प. नई दिल्ली ने लवणग्रस्त मृदाओ से सबंधित मुददों पर कहा कि स्थानीय व क्षेत्रीय स्तरो पर नितियों व पद्धतियो की जरूरत है।

डा0 प्रबोधचन्द्र शर्मा, निदेशक केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल भारत ने लवणग्रस्त मृदाओ की वर्तमान स्थिति व प्रबंध समस्याओं को संस्थान द्वारा विकसित प्रौद्योगिकीयों की सहायता से हल करने पर जोर दिया।

इस वेबीनार में आस्ट्रेलिया, अमेरिका, कनाडा, दुबई और भारत के प्रमुख वक्ताओं बहु–तनावों के लिये विश्वभर में मृदा लवणता की स्थिति, मानचित्रिकरण, फसल विविधता,लवणसहनशील प्रजातिया और टिकाउ खेती विषयो पर अपने विचार व्यक्त किये। विश्वभर से 554 वैज्ञानिको, शोधकर्ता, तथा 17 वक्ताओं ने इस वेबीनार में सक्रिय रूप से भाग लिया। यू टयूब द्वारा लगभग 200 व्यक्तियों ने इस वेबीनार का लाभ उठाया। डा0 एच.एस. जाट, प्रधान वैज्ञानिक व सचिव द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया।